भगत रविदास – सबद ३३

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥

रागु मारू, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ११०६

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥ रहाउ ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥१॥

सार: सार्वभौमिक नियम बिना किसी भेदभाव के काम करते हैं। वह किसी भी प्रकार के पक्षपात, सामाजिक मान्यताओं या धार्मिक सत्ता से ऊपर होते हैं। यह नियम न तो पद, आस्था-प्रणालियों या संस्थागत शक्ति से प्रभावित होते हैं और न ही परंपरागत सीमाओं या बहुमत की राय के अनुसार ढलते हैं। जब हम स्वयं को इन नियमों के साथ जोड़ते हैं तब हम अपने जीवन में सामंजस्य और संतुलन की स्थिति पैदा करते हैं, इसके विपरीत, उन्हें अनदेखा करने या उनका विरोध करने से अक्सर भ्रम और परेशानी होती है। यह सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से लागू होते हैं, व्यक्तिगत पसंद से परे होते हैं और बिना किसी पूर्वाग्रह के परिणाम देते हैं। वह बताते हैं कि सच्ची सत्ता आंतरिक सद्भाव से आती है जो निरंतर हमें संतुष्टि और स्पष्टता की ओर ले जाती है।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
इतने प्यार से देखभाल, तुम्हारे अलावा और कौन कर सकता है? यह अंदरूनी जागरूकता की उस अद्वितीय गहराई को रेखांकित करता है जिसे कोई और बदल नहीं सकता।

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥ रहाउ ॥
ग़रीबों की संरक्षक, सर्वव्यापी चेतना, मेरे सिर पर शाही छत्र रखती है। यह दिखाता है कि ज्ञान कैसे आत्मा को ऊपर उठा, उन लोगों को आत्म-सम्मान और स्वाभाविक गरिमा की भावना देता है जिन्हें समाज अक्सर अनदेखा कर देता है। (१)(विराम)

जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
तुम उन्हें गले लगाते हो और स्वीकार करते हो जिनका स्पर्श समाज अपवित्र मानता है। यह दिखाता है कि घमंड के रूप में जो अज्ञानता छिपी होती है, कैसे द्वैत के दर्द की ओर ले जा सकती है जबकि एकत्व जो जागरूकता देखती है, समावेश का आनंद ला सकती है।

नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१॥
सार्वभौमिक चेतना नीच को ऊँचा करती है और किसी से नहीं डरती। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि सार्वभौमिक नियम पूर्वाग्रहों, सामाजिक अपेक्षाओं और स्थापित सत्ता के हर तरह के पक्षपात से दूर काम करते हैं। (१)

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥
नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, साधना और सैन, सभी द्वैत के सागर को पार कर गए। विविध पृष्ठभूमि के इन सम्मानित लोगों की सूची और उनकी साँझा अनुभूतियाँ ज्ञान की सार्वभौमिकता को प्रमाणित करती हैं।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥१॥
रविदास कहते हैं, 'सुनो, हे बुद्धिमानों', सर्वव्यापी चेतना सब कुछ करने में सक्षम है। यह अंतर्दृष्टि हमें अपनी आंतरिक सार्वभौमिक चेतना की क्षमता को पहचानने और उसे उजागर करने के लिए प्रेरित करती है। (२)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास सामाजिक और धार्मिक नियमों को चुनौती देते हैं और भक्ति का ऐसा रूप पेश करते हैं जो ऊँच-नीच से परे है। वह एक शाही छत्र की कल्पना का इस्तेमाल करते हैं जो राजाओं के लिए आरक्षित संप्रभुता का प्रतीक है जिसे कमज़ोर के सिर पर रख समानता का एक शक्तिशाली संदेश देते हैं। यह कल्पना इस बात पर ज़ोर देती है कि सार्वभौमिक वास्तविकता समानता लाती है जो समाज द्वारा तय की गई श्रेष्ठता या हीनता की धारणाओं के भेद मिटाती है। जागरूकता किसी पद या शक्ति का विशेषाधिकार नहीं है, यह एकत्व के साथ सच्ची आत्मीयता से पैदा होती है जो निर्भीक संवेदनशीलता को अपनाती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com